३. निज भाषा

(पठनार्थ)

– भारतेंदु हरिश्चंद्र

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।।

अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन ।
पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन ।।

उन्नति पूरी है तबहि, जब घर उन्नति होय ।
निज शरीर उन्नति किए, रहत मूढ़ सब कोय ।।

निज भाषा उन्नति बिना, कबहुँ न ह्वै हैं सोय ।
लाख उपाय अनेक यों, भले करे किन कोय ।।

इक भाषा इक जीव, इक मति सब घर के लोग ।
तबै बनत है सबन सों, मिटत मूढ़ता सोग ।।

और एक अति लाभ यह, या में प्रगट लखात ।
निज भाषा में कीजिए, जो विद्या की बात ।।

तेहि सुनि पावै लाभ सब, बात सुनै जो कोय ।
यह गुन भाषा और महँ, कबहूँ नाहीं होय ।।

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार ।
सब देसन से लै करहू, भाषा माँहि प्रचार ।।

भारत में सब भिन्न अति, ताही सों उत्पात ।
विविध देस मतहू विविध, भाषा विविध लखात ।।

परिचय

जन्म : ९ सितंबर १८५०, वाराणसी (उ.प्र.) **मृत्यु :** ६ जनवरी १८८५, वाराणसी (उ.प्र.) **परिचय :** बहुमुखी प्रतिभा के धनी भारतेंदु हरिश्चंद्र को खड़ी बोली का जनक कहा जाता है । आपने कविता, नाटक, निबंध, व्याख्यान आदि का लेखन किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : बंदर-सभा, बकरी का विलाप (हास्य काव्य कृतियाँ), अंधेर नगरी चौपट राजा (हास्य-व्यंग्य प्रधान नाटक) भारत वीरत्व, विजय-बैजयंती, सुमनांजलि, मधुमुकुल, वर्षा-विनोद, राग-संग्रह आदि (काव्य संग्रह) ।

पद्य संबंधी

दोहाः यह अर्द्ध सम मात्रिक छंद है । इसमें चार चरण होते हैं ।

इन दोहों में कवि ने अपनी भाषा के प्रति गौरव अनुभव करने, मिलकर उन्नति करने, मिलजुलकर रहने का संदेश दिया है।

शब्द संसार

निज (सर्व.सं.) = अपना
हिय (पु.सं.) = हृदय
सूल (पुं.सं.) = शूल, काँटा
जदपि (योज.) = यद्यपि
मूढ़ (वि.सं.) = मूर्ख
कोय (सर्व.) = कोई
मति (स्त्री.सं.) = बुद्धि
महँ (अव्य.) (सं.) = मध्य
देसन (पु.सं.) = देश
उत्पात (पु.सं.) = उपद्रव

मौलिक सृजन

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल' इस कथन की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

संभाषणीय

'हिंदी दिवस' समारोह के अवसर पर अपने वक्तृत्व में हिंदी भाषा का महत्त्व प्रस्तुत कीजिए ।

लेखनीय

अपने विद्‌यालय में मनाए गए 'बाल दिवस' समारोह का वर्णन लिखिए ।

मैं हूँ यहाँ

https://youtu.be/O_b9Q1LpHs8

पठनीय

88CV2J

हिंदी भाषा का प्रचार और प्रसार करने वाले महान व्यक्तियों की जानकारी अंतरजाल/पुस्तकालय से पढ़िए ।

- पुरुषोत्तमदास टंडन
- लोकमान्य टिळक
- सेठ गोविंददास
- मदन मोहन मालवीय

भाषा बिंदु

शब्द-युग्म पूरे करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिएः-

घर - [ ] ....

ज्ञान - [ ] ....

भला - [ ] ....

प्रचार - [ ] ....

भूख - [ ] ....

भोला - [ ] ....

रचना बोध

....
....
....